ज्ञान मीमांसा

भारतीय दर्शन को मूलत: आध्यात्मिक माना गया है। चाहे वह आस्तिक षट्दर्शन हो या नास्तिक बौद्ध व जैन दर्शन हो। लेकिन चार्वाक एक ऐसा दर्शन है जिसे आध्यात्मिक कम जबकि भौतिकवादी जड़वादी से अधिक जुड़ा हुआ मालूम होता है। यही कारण है,कि पश्चात दर्शन के पास इसे माना जाता है, इसके उत्पत्ति के तीन विचार हैं-

1) चार्वाक दर्शन चर्व धातु से बना है, जिसका अर्थ चबाना या खाना अतः इस दर्शन का मूल भाव खाओ पियो मस्त रहो है
2) चारु अर्थात मीठा तथा वाक अर्थात मीठा वचन अर्थात व विचार जो मन को सुख व आनंद से भर दे चार्वाक है।
3) चार्वाक नाम के ऋषि हुए जो जड़ व भौतिकवाद के समर्थक थे, उन्होंने वैदिक दर्शन के मध्य ए क विरोध की धारा चलाई जो अध्यात्म से भौतिक तथा योग से भोग जाने की बात करता था। यह परलोक से इहलोक व मोक्ष के स्थान में आनंद की बात करता था। समय के साथ उसके आने वाली आई बढ़ते गए जिसे चार्वाक दर्शन का जन्म हुआ।

तीनों से कोई भी विचार या स्पष्ट हो जाता है ,कि चार्वाक दर्शन प्राचीनतम दर्शन में से एक है जो वैदिक दर्शन के विरोध में जन्म लेता है और इसके विरोध से अन्य वैदिक दर्शनों का विस्तार होता है।

चार्वाक दर्शन में ज्ञान मीमांसा- चार्वाक दर्शन में ज्ञान मीमांसा परम ज्ञान की खोज है और वैदिक दर्शन में यह कहा गया है, कि ज्ञान अनुमान व उपमान और शब्द प्रकार का निर्भर होता है. लेकिन चार्वाक कहते हैं, कि ज्ञान एकमात्र आधार है ओर वह है ''प्रत्यक्ष'' वे कहते हैं कि 'प्रत्यक्ष किम प्रमाणम' अर्थात प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए व्यवहारिक रूप से इंद्रिय अनुभव वही वास्तविक ज्ञान है ।यह संदेह रहित अर्थात निश्चित है, वह विवाद रहित है, ऐसे ज्ञान को अनुमान की आवश्यकता नहीं अत: चार्वाक अनुभव से प्राप्त ज्ञान को ही सच्चा ज्ञान मानते हैं और प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं।

चार्वाक अपनी ज्ञान मीमांसा के समर्थन में तीन वैदिक विचार का खंडन करते हैं-

1) विशिष्ट बोध अनुमान प्रमाण का खंडन -अनुमान संदेह मुक्त वास्तविक व निश्चित ज्ञान नहीं लाते क्योंकि अनुमान में व्याप्ति का विचार होता है।(व्याप्ति अर्थात दो चीजों के मध्य आवश्यक संबंध जैसे दुआ है तो आग होगा)। वह कहते हैं कि व्याप्ति अनिवार्य हो आवश्यक नहीं इसीलिए अनुमान से मिला ज्ञान भी सदा सही नहीं हो सकता ।

2) शब्द प्रमाण का खंडन –शब्द ज्ञान सदैव सही हो आवश्यक नही क्यूकी कई बार यह ज्ञान गलत भी होत है तथा कई बार यह ज्ञान व्यक्ति निष्ठा पर होता है तथा कई बार यह भी अनुमान पर आधारित होता है कई बार शब्द प्रमाण अप्रामाणिक होता है इस आधार पर चार्वाक ने शब्द प्रमाण का खण्डन किया है।

3) उपमान प्रमाण का खंडन- अनुमान की तरह उपमान भी सदैव सही हो आवश्यक नहीं यह सामान्य बुद्धि है अतः एक अनुमान है ,उत्तर व्याप्ति की जो समस्या प्रमाण में थी वह समस्या उपमान में भी है जो व्याप्ति से जुड़ा है ।

अतः स्पष्ट है कि चार्वाक अपनी ज्ञान मीमांसा में वेदों को अस्वीकार करते हैं उनके प्रमाणिकता पर प्रश्न लगाते हैं। कई बार उससे आगे जाकर उनका विरोध व उनकी निंदा करते हैं। वे कहते हैं-

1 वैदिक वाक्य विरोधाभासी है। इनकी प्रशंसा केवल ऋषियों ने की है , क्योंकि वैदिक कर्मकांड उसे ब्राह्मणों को जीविको पार्जन का सहारा मिलता है ।

2 वे यह भी कहते हैं की यह मतलबी ब्राह्मण का संयंत्र है ऐसे ज्ञान कभी प्रमाणिक नहीं हो सकता।

चार्वाक ज्ञान से एकपक्षी व अतिवादी लगती है क्योंकि वास्तव में ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमान .उपमान और शब्द का प्रमाण का मिश्रण है। इस दुनिया मे कोई भी व्यक्ति अपने ज्ञान को पूर्ण सत्य व सार्वभौमिक नही कह सकता है क्यूकी ज्ञान का विस्तार निरंतर होता रहता है और समय मे आगे जाने पर प्रत्येक ज्ञान का तोड़ मिल ही जाता हैं ।